राजा, किसान और नगर

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» इतिहास के स्रोत और अभिलेखशास्त्र का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). अभिलेखशास्त्र क्या है?
उत्तर – अभिलेखशास्त्र, अभिलेखों के अध्ययन को कहते हैं।

प्रश्न 2 (आसान). जेम्स प्रिंसेप ने कौन सी लिपियां पढ़ीं?
उत्तर – ब्राह्मी और खरोष्ठी।

प्रश्न 3 (मध्यम). इतिहास के अध्ययन के लिए अभिलेख क्यों महत्वपूर्ण हैं?
उत्तर – अभिलेख स्थायी प्रमाण होते हैं जो हमें राजाओं के काम, लोगों के दान और विचारों के बारे में सीधे जानकारी देते हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). अशोक के नाम के अलावा, अभिलेखों में अक्सर 'पियदस्सी' शब्द का भी प्रयोग क्यों होता था?
उत्तर – पियदस्सी का मतलब था 'मनोहर मुखाकृति वाला राजा'। कई अभिलेखों पर अशोक को इसी नाम से संबोधित किया गया है, जिससे पता चलता है कि वह लोकप्रिय थे।

» जेम्स प्रिंसेप और अशोक के अभिलेखों की deciphering

प्रश्न 5 (आसान). जेम्स प्रिंसेप ने कौन सी दो लिपियों को decipher किया?
उत्तर – ब्राह्मी और खरोष्ठी

प्रश्न 6 (आसान). 'पियदस्सी' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – मनोहर मुखाकृति वाला राजा

प्रश्न 7 (मध्यम). अशोक के अभिलेखों की deciphering से भारतीय इतिहास को क्या लाभ हुआ?
उत्तर – इससे भारतीय राजनीतिक इतिहास को एक नई दिशा मिली और मौर्य राजवंश तथा सम्राट अशोक के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली।

प्रश्न 8 (कठिन). जेम्स प्रिंसेप की खोज से पहले, सम्राट अशोक के बारे में जानकारी क्यों सीमित थी?
उत्तर – क्योंकि उनके अभिलेखों की लिपियाँ ब्राह्मी और खरोष्ठी पढ़ी नहीं गई थीं, जिससे उनके शासन और संदेशों तक पहुँच नहीं थी।

» सोलह महाजनपद और उनकी विशेषताएं

प्रश्न 9 (आसान). सोलह महाजनपद किस शताब्दी ई.पू. में उभरे थे?
उत्तर – छठी शताब्दी ई.पू.

प्रश्न 10 (आसान). मगध, कोशल, और वज्जि किसके उदाहरण हैं?
उत्तर – महाजनपदों के

प्रश्न 11 (मध्यम). सोलह महाजनपदों की दो प्रमुख शासन प्रणालियाँ कौन सी थीं?
उत्तर – राजतंत्र (राजा का शासन) और गण/संघ (कई लोगों का समूहशासन)।

प्रश्न 12 (कठिन). आपको क्या लगता है कि अधिकतर महाजनपदों की राजधानियाँ किलेबंद क्यों होती थीं?
उत्तर – राजधानियाँ किलेबंद इसलिए होती थीं ताकि वे बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रहें और राजा अपनी प्रजा व खजाने की रक्षा कर सके।

» मगध का उत्कर्ष

प्रश्न 13 (आसान). मगध के उत्कर्ष के पीछे किन दो प्राकृतिक संसाधनों का मुख्य योगदान था?
उत्तर – उपजाऊ भूमि और लोहे की खदानें।

प्रश्न 14 (आसान). मगध की पहली राजधानी का नाम क्या था?
उत्तर – राजगृह।

प्रश्न 15 (मध्यम). गंगा नदी मगध के उत्कर्ष में किस प्रकार सहायक थी? दो मुख्य बिंदुओं में बताओ।
उत्तर – गंगा नदी से सस्ता और सुगम जलमार्ग मिलता था, जिससे व्यापार और सेना का आवागमन आसान होता था। साथ ही, नदी के किनारे की भूमि बहुत उपजाऊ थी।

प्रश्न 16 (कठिन). मगध के उत्कर्ष में केवल प्राकृतिक संसाधन ही नहीं, बल्कि कुछ शासकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी। किन्हीं दो ऐसे शासकों के नाम बताइए और उनकी नीतियों का क्या महत्व था?
उत्तर – बिम्बिसार, अजातशत्रु, और महापद्मनंद जैसे महत्वाकांक्षी शासकों ने मगध को शक्तिशाली बनाने में अहम भूमिका निभाई। उनकी दूरदर्शी नीतियों और सैन्य शक्ति ने मगध का विस्तार किया और उसे एक मजबूत साम्राज्य बनाया।

» मौर्य साम्राज्य: स्थापना और जानकारी के स्रोत

प्रश्न 17 (आसान). मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?
उत्तर – चंद्रगुप्त मौर्य ने.

प्रश्न 18 (आसान). कौटिल्य द्वारा लिखे गए ग्रंथ का नाम क्या है जो मौर्यकालीन जानकारी का एक स्रोत है?
उत्तर – अर्थशास्त्र.

प्रश्न 19 (मध्यम). सम्राट अशोक के अभिलेखों की क्या खासियत थी और वे किस माध्यम पर लिखे जाते थे?
उत्तर – अशोक के अभिलेख पहले ऐसे थे जिनमें सम्राट अपने अधिकारियों और प्रजा के लिए संदेश लिखवाते थे. वे प्राकृतिक पत्थरों और पॉलिश किए हुए स्तंभों पर लिखे जाते थे, जिनमें धर्म के प्रचार और नैतिक मूल्यों की बातें होती थीं.

प्रश्न 20 (कठिन). अगर हमें मौर्य साम्राज्य के प्रशासन के बारे में जानना हो, तो कौन सा साहित्यिक स्रोत सबसे उपयोगी होगा और क्यों?
उत्तर – अगर हमें मौर्य साम्राज्य के प्रशासन के बारे में जानना है, तो कौटिल्य (चाणक्य) का 'अर्थशास्त्र' सबसे उपयोगी होगा. क्योंकि कौटिल्य चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे और उन्होंने इस ग्रंथ में राज्य-शासन, अर्थनीति, और सैन्य नीतियों का विस्तार से वर्णन किया है, जिससे हमें मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था की गहरी जानकारी मिलती है.

» मौर्य साम्राज्य का प्रशासन और अशोक का धम्म

प्रश्न 21 (आसान). मौर्य साम्राज्य की राजधानी का नाम बताइए।
उत्तर – पाटलिपुत्र

प्रश्न 22 (आसान). सम्राट अशोक ने किस चीज़ का प्रचार किया?
उत्तर – धम्म

प्रश्न 23 (मध्यम). मौर्य साम्राज्य के किन्हीं दो प्रांतीय केंद्रों के नाम लिखिए।
उत्तर – तक्षशिला और उज्जैन (या तोसलि, सुवर्णगिरि)

प्रश्न 24 (कठिन). अशोक के धम्म के कोई दो सिद्धांत बताइए।
उत्तर – बड़ों का आदर करना, सभी जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखना, दास और सेवकों के साथ अच्छा व्यवहार करना।

» मौर्य साम्राज्य का महत्व और सीमाएं

प्रश्न 25 (आसान). मौर्य साम्राज्य कितने साल तक चला?
उत्तर – लगभग 150 साल।

प्रश्न 26 (आसान). मौर्य साम्राज्य के किस शासक ने धम्म का प्रचार किया?
उत्तर – सम्राट अशोक।

प्रश्न 27 (मध्यम). मौर्य साम्राज्य के दो प्रमुख महत्व बताइए।
उत्तर – भारत का पहला विशाल साम्राज्य; अशोक के धम्म से नैतिक मूल्यों का प्रचार।

प्रश्न 28 (कठिन). इतिहासकारों ने मौर्य साम्राज्य को प्राचीन भारतीय इतिहास का एक प्रमुख काल क्यों माना, जबकि इसकी कुछ सीमाएं भी थीं? स्पष्ट करें।
उत्तर – इतिहासकारों ने मौर्य साम्राज्य को इसलिए महत्वपूर्ण माना क्योंकि यह भारत का पहला विशाल, सुनियोजित साम्राज्य था जिसने पूरे उपमहाद्वीप में राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। अशोक का 'धम्म' और उनकी अद्वितीय कला भी इसके महत्व को बढ़ाती है। इसकी सीमाओं में लगभग 150 वर्ष की अल्पकालिकता और उपमहाद्वीप के सभी क्षेत्रों पर असमान नियंत्रण शामिल है। फिर भी, इसकी स्थापना ने भविष्य के राज्यों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया और एक आदर्श स्थापित किया, जिसने इसे एक 'प्रमुख काल' बनाया।

» नए राजधर्म सिद्धांत: दक्षिण के राजा और सरदार

प्रश्न 29 (आसान). तमिलकम क्षेत्र में किन प्रमुख सरदारी का उदय हुआ था?
उत्तर – चोल, चेर और पांड्य।

प्रश्न 30 (आसान). क्या सरदार स्थायी सेना रखते थे?
उत्तर – नहीं, सरदारियों में सामान्यतया कोई स्थायी सेना या अधिकारी नहीं होते थे।

प्रश्न 31 (मध्यम). राजा और सरदार के बीच कर वसूली के तरीके में क्या अंतर था?
उत्तर – राजा प्रजा से कर वसूलते थे, जबकि सरदार अपने अधीन लोगों से भेंट लेते थे।

प्रश्न 32 (कठिन). कुषाण शासकों ने अपनी उच्च स्थिति दर्शाने के लिए क्या उपाय अपनाया?
उत्तर – कुषाण शासकों ने स्वयं को देवी-देवताओं से जोड़ा, जैसे 'देवपुत्र' की उपाधि ली और अपनी विशाल मूर्तियाँ लगवाईं।

» दैविक राजा और गुप्त साम्राज्य

प्रश्न 33 (आसान). किस साम्राज्य के शासकों ने 'देवपुत्र' की उपाधि अपनाई?
उत्तर – कुषाण साम्राज्य

प्रश्न 34 (आसान). प्रयाग प्रशस्ति किस गुप्त शासक के बारे में जानकारी देती है?
उत्तर – समुद्रगुप्त

प्रश्न 35 (मध्यम). कुषाण शासकों ने अपनी दैवीय स्थिति को दर्शाने के लिए कौन से दो मुख्य तरीके अपनाए?
उत्तर – उन्होंने 'देवपुत्र' की उपाधि धारण की और विशाल मूर्तियाँ तथा सिक्के बनवाए जिन पर उनकी छवि देवताओं से जुड़ी थी।

प्रश्न 36 (कठिन). गुप्त साम्राज्य में 'सामंत प्रणाली' की भूमिका क्या थी और यह कैसे राजा की शक्ति को प्रभावित करती थी?
उत्तर – सामंत छोटे शासक होते थे जो बड़े राजा के अधीन काम करते थे। वे स्थानीय संसाधनों से अपना निर्वाह करते थे, राजा का आदर करते थे और उसे सैनिक सहायता भी देते थे। शक्तिशाली सामंत कभी-कभी स्वतंत्र राजा बन जाते थे, जबकि कमज़ोर राजा बड़े सामंतों के अधीन हो जाते थे, जिससे राजा की केंद्रीय शक्ति बदलती रहती थी।

» बदलते हुए देहात और राजा-प्रजा संबंध

प्रश्न 37 (आसान). जातक कथाएं किस भाषा में लिखी गई हैं?
उत्तर – पालि भाषा में।

प्रश्न 38 (आसान). प्राचीन काल में राजा और ग्रामीण प्रजा के संबंध कैसे थे?
उत्तर – तनावपूर्ण।

प्रश्न 39 (मध्यम). राजाओं द्वारा लगाए गए भारी करों से बचने के लिए किसान क्या करते थे?
उत्तर – या तो वे गाँव छोड़कर जंगल में बस जाते थे, या फिर अपनी उपज बढ़ाने के नए तरीके ढूंढते थे, जैसे लोहे के फाल वाले हल या धान की रोपाई।

प्रश्न 40 (कठिन). 'गहपति' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता था और इसका क्या महत्व था?
उत्तर – गहपति घर का मुखिया होता था और घर में रहने वाली महिलाओं, बच्चों, नौकरों और दासों पर नियंत्रण करता था। वह भूमि, जानवर या अन्य सभी वस्तुओं का मालिक होता था। इसका प्रयोग छोटे किसानों और जमींदारों के लिए भी होता था, जो ग्रामीण समाज में महत्वपूर्ण थे।

» कृषि उत्पादन बढ़ाने के तरीके और ग्रामीण समाज में विविधता

प्रश्न 41 (आसान). कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कौन से दो मुख्य तरीके अपनाए गए थे?
उत्तर – लोहे के फाल वाले हल का उपयोग और धान की रोपाई।

प्रश्न 42 (आसान). सिंचाई के लिए किन साधनों का विकास हुआ?
उत्तर – कुओं, तालाबों और नहरों का।

प्रश्न 43 (मध्यम). ग्रामीण समाज में किस प्रकार की विविधताएँ देखी गईं, और 'गहपति' कौन होते थे?
उत्तर – भूमिहीन खेतिहर श्रमिक, छोटे किसान, और बड़े ज़मींदार जैसी विविधताएँ देखी गईं। 'गहपति' छोटे किसानों और ज़मींदारों के लिए प्रयोग होने वाला शब्द था।

प्रश्न 44 (कठिन). दक्षिण भारत में बड़े ज़मींदारों, हलवाहों और दासों के लिए क्या शब्द प्रयोग होते थे?
उत्तर – वेल्लालर (बड़े ज़मींदार), उल्वर (हलवाहा) और अणिमई (दास)।

» भूमिदान और नए संभ्रांत ग्रामीण

प्रश्न 45 (आसान). प्राचीन काल में भूमिदान के प्रमाण हमें किन चीज़ों पर मिलते हैं?
उत्तर – पत्थरों और ताम्रपत्रों पर लिखे अभिलेखों पर।

प्रश्न 46 (आसान). भूमिदान मुख्य रूप से किन्हें दिया जाता था?
उत्तर – धार्मिक संस्थाओं और ब्राह्मणों को।

प्रश्न 47 (मध्यम). प्रभावती गुप्त कौन थी और उन्होंने कौन सा गाँव दान में दिया था?
उत्तर – वह चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थीं और उन्होंने 'दंगुन गाँव' दान में दिया था।

प्रश्न 48 (कठिन). इतिहासकारों में भूमिदान के प्रभावों को लेकर क्या मतभेद हैं?
उत्तर – कुछ मानते हैं कि यह कृषि को बढ़ावा देने की रणनीति थी, जबकि कुछ का मानना है कि यह राजा की कमज़ोर होती शक्ति का संकेत था, जिससे वे समर्थक जुटाते थे।

» नए नगर और नगरीय जनसंख्या

प्रश्न 49 (आसान). छठी शताब्दी ई.पू. में नगरों के विकास के मुख्य कारण क्या थे?
उत्तर – महाजनपदों की राजधानियां बनना, संचार मार्गों पर स्थित होना और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बनना।

प्रश्न 50 (आसान). 'उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र' (NBPW) क्या थे और इनका उपयोग कौन करते थे?
उत्तर – ये उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियां थीं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी होती थी। संभवतः अमीर लोग इनका उपयोग करते थे।

प्रश्न 51 (मध्यम). प्राचीन नगरों में रहने वाली विभिन्न प्रकार की नगरीय जनसंख्या का वर्णन करें।
उत्तर – नगरों में शासक वर्ग, अधिकारी, धार्मिक गुरु, व्यापारी, और विभिन्न प्रकार के शिल्पकार जैसे धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार आदि रहते थे।

प्रश्न 52 (कठिन). पुरातात्विक साक्ष्य हमें प्राचीन नगरों के जीवन के बारे में क्या जानकारी देते हैं? विस्तार से समझाएं।
उत्तर – पुरातात्विक साक्ष्य हमें NBPW जैसे मिट्टी के बर्तन दिखाते हैं जो अमीरों के जीवन का संकेत देते हैं। सोने, चांदी, कांस्य के गहने और उपकरण, हाथी दांत, शीशे की वस्तुएं, मनके आदि विभिन्न शिल्पों और व्यापार की जानकारी देते हैं। छोटे दानात्मक अभिलेखों से शिल्पकारों और व्यापारियों के व्यवसाय और दान देने की प्रथा का पता चलता है, साथ ही श्रेणियों (संघों) की उपस्थिति भी ज्ञात होती है।

» उपमहाद्वीप और उसके बाहर का व्यापार

प्रश्न 53 (आसान). पुराने समय में व्यापारी किन जानवरों का इस्तेमाल सामान ढोने के लिए करते थे?
उत्तर – बैलगाड़ी और घोड़े-खच्चर।

प्रश्न 54 (आसान). रोमन साम्राज्य में भारतीय उपमहाद्वीप से किस मसाले की बहुत माँग थी?
उत्तर – काली मिर्च।

प्रश्न 55 (मध्यम). सत्थवाह और सेट्टी में क्या अंतर था?
उत्तर – सत्थवाह व्यापारी दलों का मुखिया होता था जो पैदल या जानवरों के साथ चलते थे, जबकि सेट्टी धनी और सफल व्यापारी होते थे।

प्रश्न 56 (कठिन). रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार में अरब सागर की क्या भूमिका थी?
उत्तर – अरब सागर का रास्ता उत्तरी अफ्रीका और पश्चिम एशिया तक फैला हुआ था, जिसके ज़रिए भारतीय वस्तुएँ (जैसे काली मिर्च) रोमन साम्राज्य तक पहुँचती थीं।

» सिक्के और राजा

प्रश्न 57 (आसान). सबसे पहले कौन से प्रकार के सिक्के प्रचलन में आए थे?
उत्तर – आहत सिक्के (चाँदी और ताँबा)

प्रश्न 58 (आसान). किस शासक वर्ग ने पहली बार अपनी छवि और नाम वाले सिक्के जारी किए?
उत्तर – हिन्द-यूनानी शासक

प्रश्न 59 (मध्यम). किस काल में बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी हुए और इसका क्या महत्व था?
उत्तर – पहली शताब्दी ईस्वी में कुषाण राजाओं ने सोने के सिक्के जारी किए। इनका व्यापक प्रयोग यह दर्शाता है कि उस समय बहुमूल्य वस्तुओं और बड़ी मात्रा में चीज़ों का व्यापार होता था, जिससे आर्थिक समृद्धि बढ़ी।

प्रश्न 60 (कठिन). छठी शताब्दी ईस्वी के बाद सोने के सिक्कों का मिलना कम क्यों हो गया? इतिहासकारों के क्या विचार हैं?
उत्तर – इतिहासकारों के अनुसार, रोमन साम्राज्य के पतन से दूरवर्ती व्यापार में कमी आई, जिससे उन राज्यों की संपन्नता पर असर पड़ा जो इससे लाभ उठाते थे। कुछ का मानना है कि नए नगर और व्यापार के नए तंत्र विकसित हुए, और सिक्के प्रचलन में होने के कारण उनका संग्रह कम हुआ।

» अभिलेखों का अर्थ निकालना: ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि

प्रश्न 61 (आसान). ब्राह्मी लिपि का उपयोग मुख्य रूप से किन अभिलेखों में किया गया है?
उत्तर – अशोक के अभिलेखों में।

प्रश्न 62 (आसान). जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि का अर्थ किस वर्ष निकाला?
उत्तर – 1838 ई. में।

प्रश्न 63 (मध्यम). खरोष्ठी लिपि को पढ़ने में किन सिक्कों ने सबसे ज़्यादा मदद की?
उत्तर – हिंद-यूनानी राजाओं के सिक्कों ने।

प्रश्न 64 (कठिन). ब्राह्मी लिपि के अध्ययन में यूरोपीय विद्वानों की मदद किन भारतीय विद्वानों ने की?
उत्तर – भारतीय पंडितों ने आधुनिक बंगाली और देवनागरी लिपि की पांडुलिपियों की तुलना करके मदद की।

» अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य की सीमाएं

प्रश्न 65 (आसान). अभिलेख नष्ट होने से ऐतिहासिक जानकारी पर क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – जानकारी अधूरी या अस्पष्ट हो सकती है, कुछ महत्वपूर्ण तथ्य लुप्त हो सकते हैं।

प्रश्न 66 (आसान). पुराने अभिलेखों को पढ़ना क्यों मुश्किल होता है?
उत्तर – क्योंकि उनकी लिपि और भाषा आज की भाषा से अलग होती है, और उन्हें समझने के लिए विशेष ज्ञान और शोध की ज़रूरत होती है।

प्रश्न 67 (मध्यम). क्या अभिलेखों में आम लोगों के जीवन के बारे में पूरी जानकारी मिलती है? क्यों नहीं?
उत्तर – नहीं, अक्सर नहीं मिलती। क्योंकि अभिलेख आमतौर पर राजाओं या शक्तिशाली लोगों द्वारा अपनी उपलब्धियों या धार्मिक दान के लिए बनवाए जाते थे, आम लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी का ज़िक्र कम होता था।

प्रश्न 68 (कठिन). एक इतिहासकार अभिलेखों का इस्तेमाल करते समय 'समीक्षा' क्यों करता है? इसका क्या मतलब है?
उत्तर – इतिहासकार अभिलेखों की 'समीक्षा' इसलिए करते हैं ताकि वे सिर्फ अभिलेख में लिखी बातों को आँख मूँदकर सच न मान लें। समीक्षा का मतलब है, उसकी गहन जाँच करना, अन्य स्रोतों से उसकी तुलना करना, और यह समझना कि अभिलेख को किसने लिखवाया, उसका उद्देश्य क्या था, और कहीं उसमें कोई पक्षपात तो नहीं है। इससे उन्हें अतीत की ज़्यादा सटीक और संतुलित समझ मिलती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. जेम्स प्रिंसेप ने किन दो प्राचीन लिपियों का अर्थ निकाला?

› जेम्स प्रिंसेप एक ब्रिटिश अधिकारी थे जिन्होंने 1830 के दशक में भारतीय अभिलेखों पर काम किया।
› उन्होंने देखा कि ज़्यादातर पुराने अभिलेख और सिक्के कुछ खास लिपियों में लिखे हैं।
› बहुत रिसर्च और मेहनत के बाद, उन्होंने इन लिपियों को पढ़ लिया।

उत्तर – उन्होंने ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का अर्थ निकाला।

उदाहरण 2. जेम्स प्रिंसेप ने किन दो मुख्य लिपियों को decipher किया और इससे भारतीय इतिहास को क्या फायदा हुआ?

› सबसे पहले, जेम्स प्रिंसेप ने 1830 के दशक में 'ब्राह्मी' और 'खरोष्ठी' लिपियों को पढ़ने में सफलता हासिल की।
› उन्होंने सिक्कों और अभिलेखों पर लिखे कुछ शब्दों को पहचाना। उन्होंने देखा कि ज़्यादातर अभिलेखों पर 'पियदस्सी' नाम लिखा था, जिसका मतलब होता है 'मनोहर मुखाकृति वाला राजा'।
› कुछ अभिलेखों पर 'असोक' नाम भी मिला। बौद्ध ग्रंथों में भी असोक नाम के एक महान शासक का ज़िक्र था।
› जब 'पियदस्सी' और 'असोक' नाम जुड़ गए, तो इतिहासकार समझ गए कि यह सम्राट अशोक ही थे, जिनके बारे में पहले ज़्यादा जानकारी नहीं थी।
› इस खोज से भारत के राजनीतिक इतिहास को एक नई दिशा मिली। इतिहासकारों ने विभिन्न राजवंशों की वंशावलियाँ (genealogies) फिर से बनाई और भारत के शुरुआती इतिहास की एक साफ तस्वीर सामने आई।

उत्तर – जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ा। इससे सम्राट अशोक की पहचान हुई और भारत के राजनीतिक इतिहास को समझने में बहुत मदद मिली, जिससे शुरुआती भारतीय राजवंशों की बेहतर जानकारी मिल पाई।

उदाहरण 3. छठी शताब्दी ई.पू. में सोलह महाजनपदों के उदय के क्या कारण थे? किन्हीं दो कारणों का उल्लेख कीजिए।

› पहला कारण था लोहे का बढ़ता उपयोग। लोहे से नए और मजबूत औजार बनने लगे, जिससे खेती करना आसान हो गया और उपज भी बढ़ गई।

› दूसरा कारण था कृषि उपज में वृद्धि। जब खेती अच्छी होने लगी, तो लोगों के पास खाने के लिए ज़्यादा अन्न हुआ और वे बड़े-बड़े शहरों में बसने लगे।

› इन आर्थिक बदलावों ने शक्तिशाली राज्यों को उभरने में मदद की।

उत्तर – छठी शताब्दी ई.पू. में लोहे के बढ़ते उपयोग और कृषि उपज में वृद्धि के कारण सोलह महाजनपदों का उदय हुआ।

उदाहरण 4. मगध के उत्कर्ष के पीछे भौगोलिक और आर्थिक कारण क्या थे? विस्तार से समझाइए।

› पहला कारण था, मगध का कृषि उत्पादन। मगध की भूमि बहुत उपजाऊ थी, जिससे खूब सारा अनाज पैदा होता था। जब खाने को पर्याप्त होता है, तो लोग मज़बूत होते हैं और राज्य को भी कर मिलता है।

› दूसरा बड़ा कारण था लोहे की खदानें। यह आधुनिक झारखंड के पास स्थित थीं। लोहे से अच्छे औज़ार बनते थे खेती के लिए और बढ़िया हथियार बनते थे सेना के लिए। सोचो, बिना लोहे के मज़बूत हथियार कैसे बनते?

› तीसरा, जंगली इलाकों में हाथी आसानी से मिलते थे। हाथियों को सेना में शामिल किया जाता था, जो उस समय की लड़ाई में बहुत प्रभावशाली होते थे। एक हाथी पूरी टुकड़ी को तितर-बितर कर सकता था।

› चौथा, गंगा और उसकी सहायक नदियाँ मगध से होकर गुज़रती थीं। इन नदियों से व्यापार करना और सामान एक जगह से दूसरी जगह ले जाना बहुत सस्ता और आसान होता था।

› पांचवां, इसकी पहली राजधानी राजगृह (आज का राजगीर) पहाड़ियों से घिरी थी, जो उसे प्राकृतिक सुरक्षा देती थी। बाद में पाटलिपुत्र (आज का पटना) को राजधानी बनाया गया, जो गंगा नदी पर स्थित होने के कारण व्यापार और सेना के आवागमन के लिए बेहतरीन जगह थी।

उत्तर – मगध के उत्कर्ष के भौगोलिक और आर्थिक कारणों में उपजाऊ भूमि से उच्च कृषि उत्पादन, लोहे की खदानों से औज़ार व हथियार निर्माण, सेना में हाथियों का प्रयोग, गंगा नदी से सस्ता व सुगम व्यापारिक आवागमन, और पहाड़ियों तथा नदियों द्वारा मिली प्राकृतिक सुरक्षा शामिल थे।

उदाहरण 5. मौर्य साम्राज्य के इतिहास को जानने के तीन प्रमुख स्रोतों के नाम बताओ और उनमें से प्रत्येक का एक उदाहरण भी दो.

› पहला प्रमुख स्रोत है पुरातात्विक प्रमाण. इसके उदाहरण के तौर पर मौर्यकालीन मूर्तिकला या खुदाई में मिले बर्तन और इमारतें हो सकती हैं.

› दूसरा प्रमुख स्रोत है साहित्यिक ग्रंथ. इसके उदाहरण में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ की किताब 'इंडिका' या कौटिल्य (चाणक्य) का 'अर्थशास्त्र' शामिल है.

› तीसरा प्रमुख स्रोत है अभिलेख. इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण सम्राट अशोक के पत्थर और स्तंभों पर खुदे हुए शिलालेख हैं, जिन पर उनके संदेश लिखे हुए थे.

उत्तर – मौर्य साम्राज्य के तीन प्रमुख स्रोत पुरातात्विक प्रमाण (मूर्तिकला), साहित्यिक ग्रंथ (इंडिका, अर्थशास्त्र) और अभिलेख (अशोक के शिलालेख) हैं.

उदाहरण 6. मान लीजिए आपको एक चार्ट बनाना है जिसमें मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्रों के नाम और उनका एक-एक महत्व बताना है।

› सबसे पहले, हमें मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्रों के नाम याद करने होंगे: पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जैन, तोसलि और सुवर्णगिरि।

› अब, हर केंद्र का महत्व सोचेंगे। पाटलिपुत्र तो राजधानी थी, तो वह केंद्रीय प्रशासन का गढ़ था।

› तक्षशिला और उज्जैन दोनों लंबे व्यापार मार्गों पर स्थित थे, इसलिए वे व्यापार और आवागमन के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे।

› सुवर्णगिरि का मतलब है 'सोने के पहाड़', तो यह कर्नाटक में सोने की खदानों के लिए जाना जाता था।

› तोसलि (आज का ओडिशा) कलिंग युद्ध के बाद अशोक के साम्राज्य का हिस्सा बना, और यह पूर्वी तट पर एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

उत्तर – 1. पाटलिपुत्र: केंद्रीय राजधानी, साम्राज्य का प्रशासनिक केंद्र।

2. तक्षशिला: उत्तर-पश्चिमी प्रांत का केंद्र, महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग पर।

3. उज्जैन: पश्चिमी प्रांत का केंद्र, व्यापारिक महत्व।

4. तोसलि: पूर्वी प्रांत (कलिंग) का केंद्र, तटीय क्षेत्र पर नियंत्रण।

5. सुवर्णगिरि: दक्षिणी प्रांत का केंद्र, सोने की खदानों के लिए महत्वपूर्ण।

उदाहरण 7. इतिहासकारों ने मौर्य साम्राज्य को भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल क्यों माना, और इसकी किन्हीं दो सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

› सबसे पहले हम देखेंगे कि मौर्य साम्राज्य का महत्व क्या था। इसका सबसे बड़ा महत्व यह था कि यह भारत का पहला बहुत बड़ा और व्यवस्थित साम्राज्य था। इससे पहले इतने बड़े स्तर पर कोई शासन नहीं था।

› दूसरा महत्व, इसकी कला और स्थापत्य बहुत खास थी, खासकर अशोक के स्तंभ और गुफाएं। इनमें हमें अद्भुत कारीगरी दिखती है।

› तीसरा, सम्राट अशोक का 'धम्म' – शांति, अहिंसा और नैतिक मूल्यों का प्रचार – जिसने समाज को एक नई दिशा दी। इसलिए इतिहासकारों ने इसे बहुत खास माना।

› अब आते हैं सीमाओं पर। इसकी पहली सीमा यह थी कि यह साम्राज्य सिर्फ़ लगभग 150 साल तक ही चला। भारतीय इतिहास के इतने लंबे दौर में यह बहुत छोटा समय था।

› दूसरी सीमा यह थी कि मौर्य साम्राज्य उपमहाद्वीप के सभी हिस्सों में फैला हुआ नहीं था। और जिन हिस्सों में फैला भी था, वहाँ भी केंद्र से नियंत्रण हर जगह एक जैसा नहीं था, दूर के इलाकों में यह कमजोर था।

› तो हम कह सकते हैं कि यह महान तो था, पर इसकी चमक बहुत लंबे समय तक नहीं रह पाई, और हर जगह एक जैसी नहीं थी।

उत्तर – महत्व: भारत का पहला विशाल साम्राज्य, अद्भुत मौर्यकालीन कला व स्थापत्य, अशोक के 'धम्म' द्वारा नैतिक मूल्यों का प्रसार।

सीमाएं: साम्राज्य का लगभग 150 वर्ष तक ही टिकना (अल्पकालिकता), तथा उपमहाद्वीप के सभी क्षेत्रों पर एकसमान नियंत्रण का अभाव।

उदाहरण 8. एक सरदार के मुख्य कार्य क्या होते थे?

› पहला कार्य होता था विशेष अनुष्ठानों का संचालन करना। जैसे कोई बड़ा त्योहार या धार्मिक कार्य करवाना।

› दूसरा, युद्ध के समय अपनी सेना का नेतृत्व करना।

› तीसरा, लोगों के बीच के विवादों को सुलझाना, एक मध्यस्थ (arbitrator) की तरह।

› चौथा, वे अपनी प्रजा से भेंट (gifts) लेते थे और उसे अपने समर्थकों में बांटते थे।

उत्तर – एक सरदार विशेष अनुष्ठान करवाता था, युद्ध में नेतृत्व करता था, विवादों को सुलझाता था और प्रजा से भेंट लेकर समर्थकों में बांटता था।

उदाहरण 9. कुषाण शासकों ने अपनी दैवीय स्थिति को स्थापित करने के लिए क्या तरीके अपनाए? प्रयाग प्रशस्ति किस गुप्त शासक से संबंधित है?

› कुषाण शासकों ने स्वयं को 'देवपुत्र' कहलवाया, जिसका अर्थ 'देवता का पुत्र' है।

› उन्होंने अपनी विशालकाय मूर्तियाँ बनवाईं, जैसे मथुरा के पास माट में मिली मूर्तियाँ।

› उन्होंने अपने सिक्कों पर भी अपनी छवि को देवताओं से जोड़कर दिखाया।

› प्रयाग प्रशस्ति गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण द्वारा लिखी गई थी। यह समुद्रगुप्त की प्रशंसा में लिखी गई है।

› प्रशस्तियों में राजा के गुणों, सफलताओं और उसे देवताओं के समान बताया जाता था।

उत्तर – कुषाण शासकों ने 'देवपुत्र' की उपाधि, विशाल मूर्तियाँ और सिक्कों पर देवताओं जैसी छवि अपनाकर अपनी दैवीय स्थिति स्थापित की। प्रयाग प्रशस्ति गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त से संबंधित है।

उदाहरण 10. जातक कथाओं के अनुसार, एक क्रूर राजा से परेशान प्रजा ने अपनी समस्या का समाधान कैसे निकाला?

› जातक कथाएँ हमें बताती हैं कि राजा और प्रजा के संबंध हमेशा मधुर नहीं थे।

› राजा अक्सर अपने खजाने को भरने के लिए किसानों पर भारी कर लगाते थे।

› ऐसी स्थिति में, जब प्रजा बहुत अधिक परेशान हो जाती थी, तो एक मुख्य उपाय था अपने गाँव छोड़कर जंगल की ओर भाग जाना।

› दूसरा तरीका था, बढ़ती कर की मांग को पूरा करने के लिए अपनी उपज बढ़ाने के नए तरीके खोजना, जैसे लोहे के फाल वाले हल या धान की रोपाई।

उत्तर – क्रूर राजा से परेशान प्रजा ने अपनी समस्या का समाधान गाँव छोड़कर जंगल में बसकर और अपनी उपज बढ़ाने के नए तरीके अपनाकर निकाला।

उदाहरण 11. यदि एक छोटे किसान के पास लोहे का हल नहीं है और वह केवल कुदाल से खेती करता है, जबकि उसका पड़ोसी धान की रोपाई और नहर से सिंचाई करता है, तो दोनों के उत्पादन और सामाजिक स्थिति में क्या अंतर आएगा?

› सबसे पहले, लोहे का हल होने से ज़मीन की जुताई गहरी और अच्छी होगी, जिससे फसल बेहतर उगेगी। कुदाल से यह काम उतना प्रभावी नहीं होगा।

› दूसरा, धान की रोपाई से कम पौधों का नुकसान होता है और प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ जाता है, जबकि सीधे बीज बोने से यह लाभ नहीं मिलेगा।

› तीसरा, नहर से सिंचाई मिलने पर फसल सूखे से बचेगी और नियमित पानी मिलेगा, जिससे उपज सुनिश्चित होगी। कुदाल वाले किसान को बारिश पर निर्भर रहना पड़ेगा।

› इन सब के परिणामस्वरूप, नहर और धान की रोपाई वाले किसान का उत्पादन अधिक होगा, उसकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी, और वह धीरे-धीरे बड़े ज़मींदार बन सकता है।

› वहीं, कुदाल और बारिश पर निर्भर रहने वाला किसान शायद ही अपनी ज़रूरत पूरी कर पाए, और वह भूमिहीन श्रमिक या छोटे किसान ही बना रह सकता है।

उत्तर – तकनीक का उपयोग करने वाला किसान अधिक उत्पादन और बेहतर आर्थिक स्थिति प्राप्त करेगा, संभवतः बड़े ज़मींदार बनेगा, जबकि दूसरा किसान छोटे किसान या भूमिहीन श्रमिक ही रहेगा, जिससे समाज में आर्थिक असमानता और विविधता बढ़ेगी।

उदाहरण 12. प्रभावती गुप्त ने 'दंगुन गाँव' दान में दिया। इस दान से गाँव के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा होगा, और राजा के लिए इसका क्या महत्व था?

› पहला प्रभाव: गाँव के लोग, जिनमें किसान और गृहस्थ शामिल थे, अब सीधे नए भूमिपति यानी आचार्य चनालस्वामी के अधीन आ गए होंगे। उन्हें उनके आदेशों का पालन करना पड़ता होगा।

› दूसरा प्रभाव: 'अग्रहार' नियम के तहत, इस गाँव में पुलिस या सैनिक प्रवेश नहीं कर सकते थे। इसका मतलब है कि गाँव पर अब सीधे राजा का नियंत्रण कम हो गया, और नए भूमिपति को एक तरह की स्वायत्तता मिल गई।

› तीसरा प्रभाव: गाँव को अब कई तरह के शाही करों से छूट मिल गई थी, जैसे घास, जानवरों की खाल, कोयला, खनिज पदार्थ, फूल और दूध देने का दायित्व। यह कर अब शायद नए भूमिपति वसूलते थे।

› राजा के लिए महत्व: राजा ने धार्मिक संस्था को दान देकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई और धार्मिक पुण्य कमाया। इससे उसे धार्मिक वर्ग का समर्थन भी मिला। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि इससे राजा दूरदराज के क्षेत्रों पर अपना अप्रत्यक्ष नियंत्रण बनाए रखते थे, क्योंकि धार्मिक लोग उनके लिए एक तरह से व्यवस्था बनाए रखते थे।

उत्तर – इस भूमिदान से गाँव की प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था बदल गई, राजा का प्रत्यक्ष नियंत्रण कम हुआ, और धार्मिक संस्था या ब्राह्मण को नए अधिकार मिल गए। राजा ने अपनी धार्मिक और राजनीतिक स्थिति मजबूत की।

उदाहरण 13. प्राचीन भारतीय नगरों के विकास में भौगोलिक स्थिति का क्या महत्व था? उदाहरण सहित समझाइए।

› पहले सोचो, लोग कहाँ रहना पसंद करते हैं और क्यों?

› फिर याद करो, प्राचीन समय में यात्रा के कौन से साधन थे - पैदल, बैलगाड़ी, नाव।

› अब देखो, ज़्यादातर नगर कहाँ बसे - नदी के किनारे (जैसे पाटलिपुत्र), जमीन के रास्तों पर (जैसे उज्जैनी), या समुद्र तट पर (जैसे पुहार)।

› इन जगहों का क्या फायदा था? नदी मार्ग से पानी और व्यापार आसान, भू-मार्ग से दूसरे शहरों से जुड़ाव, और समुद्र तट से विदेश व्यापार।

उत्तर – प्राचीन नगरों के विकास में भौगोलिक स्थिति का अत्यंत महत्व था। जो नगर संचार मार्गों (नदी मार्ग, भूतल मार्ग, समुद्री मार्ग) के किनारे बसे, वे तेज़ी से फले-फूले। उदाहरण के लिए, पाटलिपुत्र गंगा नदी के किनारे होने से व्यापार और परिवहन का केंद्र बना। उज्जैनी जैसे नगर भूतल मार्गों पर होने से महत्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्र बन गए। पुहार जैसे शहर समुद्र तट पर थे, जहाँ से समुद्री व्यापार होता था। इन अनुकूल भौगोलिक स्थितियों ने नगरों को व्यापार, संस्कृति और राजनीति के जीवंत केंद्र बनने में मदद की।

उदाहरण 14. प्राचीन भारत में व्यापार किन दो प्रमुख माध्यमों से होता था और किन्हीं दो व्यापारियों के नाम बताइए?

› सबसे पहले, व्यापार के माध्यमों पर ध्यान दें। बिना सड़कों और समुद्री रास्तों के व्यापार कैसे होगा?

› तो, पहला माध्यम था भूमार्ग (ज़मीन के रास्ते) और दूसरा जलमार्ग (समुद्र और नदियों के रास्ते)।

› अब व्यापारियों के नाम। किताब में दो मुख्य नाम दिए गए हैं जो व्यापारियों के अलग-अलग प्रकार बताते हैं।

› पहला नाम 'सत्थवाह' है, जो पैदल चलने वाले या जानवरों के साथ चलने वाले व्यापारी दलों का मुखिया होता था।

› दूसरा नाम 'सेट्टी' है, जो धनी और सफल व्यापारी होते थे।

› इस प्रकार, हमने दोनों माध्यमों और व्यापारियों के नाम बता दिए।

उत्तर – प्राचीन भारत में व्यापार दो प्रमुख माध्यमों – भूमार्ग (सड़कें) और जलमार्ग (समुद्री रास्ते) – से होता था। दो प्रमुख व्यापारी 'सत्थवाह' और 'सेट्टी' थे।

उदाहरण 15. प्राचीन भारत में विभिन्न शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्कों के प्रकारों और उनके महत्व पर संक्षेप में चर्चा करें।

› सबसे पहले, छठी शताब्दी ईसा पूर्व में 'आहत सिक्के' प्रचलन में आए। ये चाँदी और ताँबे के होते थे और इन पर ठप्पा मारकर निशान बनाए जाते थे।

› फिर, दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हिन्द-यूनानी शासकों ने ऐसे सिक्के जारी किए जिन पर शासकों की मूर्तियाँ और नाम होते थे।

› पहली शताब्दी ईस्वी में, कुषाण राजाओं ने बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी किए। ये व्यापार में बहुत सहायक सिद्ध हुए।

› बाद में, गुप्त शासकों ने सबसे 'उत्तम' गुणवत्ता वाले सोने के सिक्के चलाए, जिनसे दूर के देशों से भी व्यापार करना आसान हो गया।

› यौधेय जैसे कुछ कबीलाई गणराज्यों ने भी ताँबे के सिक्के जारी किए, जिससे पता चलता है कि वे भी व्यापार में सक्रिय थे।

› इन सिक्कों ने वस्तु-विनिमय की मुश्किलों को दूर कर व्यापार को बहुत आसान बना दिया और आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उत्तर – प्राचीन भारत में आहत सिक्कों से लेकर हिन्द-यूनानी, कुषाण, गुप्त और यौधेय शासकों द्वारा जारी किए गए सोने और ताँबे के सिक्कों ने व्यापार को सुगम बनाया, आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया और शासकों की संपन्नता में वृद्धि की।

उदाहरण 16. अभिलेखों से हमें इतिहास की जानकारी कैसे मिलती है, जब उनकी लिपियाँ पढ़ी नहीं जा सकती थीं? समझाओ कि ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को कैसे पढ़ा गया।

› सबसे पहले, यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय पंडितों की मदद से आधुनिक बंगाली और देवनागरी लिपियों की पुरानी पांडुलिपियों का अध्ययन किया।

› उन्होंने इन आधुनिक लिपियों के अक्षरों की तुलना प्राचीन अक्षरों के नमूनों से करनी शुरू की, ताकि समानताएं ढूँढ सकें।

› कई सालों की मेहनत के बाद, 1838 में जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों में इस्तेमाल हुई ब्राह्मी लिपि का अर्थ निकाल लिया। उन्हें समझ आया कि ये अभिलेख ज़्यादातर प्राकृत भाषा में थे।

› खरोष्ठी लिपि को पढ़ने के लिए, पश्चिमी भारत में मिले हिंद-यूनानी राजाओं के सिक्कों का सहारा लिया गया। इन सिक्कों पर राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी दोनों लिपियों में लिखे थे।

› यूनानी भाषा जानने वाले विद्वानों ने यूनानी नामों की तुलना खरोष्ठी में लिखे नामों से की। जैसे, अगर 'अपोलोडोटस' नाम दोनों लिपियों में लिखा है, तो 'अ' या 'प' जैसे अक्षर दोनों में एक जैसे दिखाई देंगे।

› इस तरह अक्षरों का मेल कर-करके और प्राकृत भाषा की पहचान करके खरोष्ठी लिपि को भी पढ़ लिया गया।

उत्तर – अभिलेखों से जानकारी निकालने के लिए ब्राह्मी और खरोष्ठी जैसी पुरानी लिपियों को पढ़ना बहुत ज़रूरी था। यूरोपीय विद्वानों और भारतीय पंडितों ने आधुनिक लिपियों से तुलना करके और हिंद-यूनानी सिक्कों पर दो लिपियों में लिखे नामों की मदद से इन पहेली जैसी लिपियों को सुलझाया, जिससे हमें उस समय का इतिहास पता चला।

उदाहरण 17. अशोक के अभिलेखों के उदाहरण से समझाइए कि इतिहासकार अभिलेखों से जानकारी निकालते समय किन सीमाओं का सामना करते हैं।

› पहला, भाषा और लिपि की समझ: अशोक के अभिलेख ब्राह्मी और खरोष्ठी जैसी पुरानी लिपियों में थे। जेम्स प्रिंसेप जैसे विद्वानों ने बहुत मेहनत से इन्हें समझा, लेकिन आज भी कई अभिलेख ऐसे हैं जिनकी लिपि या भाषा को पूरी तरह नहीं समझा जा सका है।

› दूसरा, अभिलेखों का नष्ट होना: समय के साथ, धूप, बारिश, हवा और बाकी चीज़ों से ये अभिलेख पत्थर से घिस गए या टूट गए। इससे कई अक्षर या पूरे वाक्य ही लुप्त हो गए। जैसे, अगर किसी अभिलेख का एक हिस्सा टूट गया, तो पूरी बात समझ नहीं आती।

› तीसरा, अभिलेखों में चुनिंदा घटनाओं का उल्लेख: अभिलेख हमेशा उन्हीं चीज़ों का ज़िक्र करते हैं जो उन्हें बनवाने वाले के लिए महत्वपूर्ण थीं। अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद अपनी पश्चाताप की भावना लिखवाई, लेकिन वो आम जनता की रोज़मर्रा की ज़िंदगी या उनके संघर्षों के बारे में नहीं बताते।

› चौथा, लिखने वाले के विचार: अभिलेख अक्सर राजाओं या धनी लोगों के विचारों को दर्शाते हैं। ये ज़रूरी नहीं कि उस समय की हर तरह की सोच या सभी लोगों की भावनाएं उसमें हों। ये एक खास नज़रिए से लिखी गई बातें होती हैं।

› पांचवा, बहुत सारे अभिलेखों का न मिलना: हमें जो अभिलेख मिले हैं, वे शायद कुल अभिलेखों का एक छोटा सा हिस्सा ही हैं। हो सकता है कि उस समय और भी बहुत कुछ लिखा गया हो जो समय के साथ खो गया या नष्ट हो गया।

उत्तर – इस तरह, अशोक के अभिलेखों से हमें बेशक बहुत जानकारी मिलती है, लेकिन इतिहासकारों को इनकी भाषा, नष्ट हुए हिस्सों, चुनिंदा विषयों और लेखक के दृष्टिकोण जैसी सीमाओं को ध्यान में रखकर ही इतिहास का निर्माण करना पड़ता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• जेम्स प्रिंसेप और उनके द्वारा पढ़ी गई लिपियों पर अक्सर एक या दो नंबर का सवाल आता है, इसे अच्छे से याद रखना!

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है, कि जेम्स प्रिंसेप की उपलब्धि का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा। इसे अच्छे से तैयार कर लेना, बच्चों!

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर महाजनपदों की विशेषताओं और उनके उदय के कारणों पर प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रमुख महाजनपदों जैसे मगध, कोशल, और वज्जि के नाम और उनकी शासन प्रणालियों को अच्छे से याद कर लेना।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में सीधे तौर पर 'मगध के उत्कर्ष के कारणों का वर्णन करें' के रूप में आ सकता है। आपको सभी भौगोलिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों को विस्तार से बताना होगा। खासकर शासकों के नाम और उनकी राजधानियों को भी याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! 'मौर्य साम्राज्य के प्रशासन की मुख्य विशेषताओं' या 'अशोक के धम्म के प्रमुख सिद्धांतों' पर सीधे प्रश्न आते हैं। मेगस्थनीज़ के विवरण और अशोक के अभिलेखों का भी इसमें ज़िक्र करना मत भूलना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है! कुषाणों की 'देवपुत्र' उपाधि और गुप्त साम्राज्य की 'प्रशस्तियों' पर अक्सर सवाल आते हैं। प्रयाग प्रशस्ति से जुड़े तथ्य (जैसे लेखक और शासक) याद रखना।

• जातक कथाओं के बारे में और राजा-प्रजा के संबंध पर आधारित प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में आते हैं, इसलिए 'गंदतिन्दु जातक' और 'गहपति' जैसे शब्दों को ध्यान से समझना महत्वपूर्ण है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! ग्रामीण समाज में विविधता और कृषि तकनीकों के विकास पर सीधा प्रश्न आ सकता है। 'गहपति' और दक्षिण भारत के कृषि वर्गों (वेल्लालर, उल्वर, अणिमई) के बारे में ज़रूर याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'प्रभावती गुप्त' का उदाहरण और भूमिदान के प्रभावों पर इतिहासकारों के अलग-अलग मतभेद, इन पर सीधे प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से तैयार कर लेना!

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर व्यापार मार्गों, व्यापारियों के प्रकार और रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार पर प्रश्न पूछे जाते हैं। आपको वस्तुओं के नाम और मार्गों की दिशाएँ भी याद रखनी चाहिए।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में सीधे तौर पर आ सकता है कि 'ब्राह्मी लिपि को कैसे पढ़ा गया?' या 'खरोष्ठी लिपि को पढ़ने की प्रक्रिया समझाइए?', इसलिए इन दोनों लिपियों को पढ़ने के तरीकों को अच्छी तरह से समझ लेना।

एक नज़र में रिवीज़न

› इतिहास के स्रोत: अभिलेख, ग्रंथ, सिक्के। अभिलेखशास्त्र = अभिलेखों का अध्ययन। प्रिंसेप ने ब्राह्मी, खरोष्ठी पढ़ी।

› प्रिंसेप ने ब्राह्मी, खरोष्ठी पढ़ी; अशोक और भारतीय इतिहास समझा।

› ईसा पूर्व छठी शताब्दी: सोलह महाजनपद, लोहे का प्रयोग, राजतंत्र/गण-संघ।

› मौर्य प्रशासन (केंद्रीय/प्रांतीय), अशोक का धम्म (नैतिक सिद्धांत, धम्म महामात्त)

› कुषाण: 'देवपुत्र' उपाधि, मूर्तियाँ; गुप्त: सामंत प्रणाली, प्रशस्तियाँ (समुद्रगुप्त - प्रयाग प्रशस्ति)

› राजा-प्रजा संबंध जातक कथाओं से पता चलते हैं, करों से बचने के लिए जंगल भागना या उपज बढ़ाना।

› कृषि तकनीक (हल, रोपाई, सिंचाई) से उत्पादन बढ़ा, पर समाज में भूमिहीन, छोटे किसान, बड़े ज़मींदार की विविधता आई।

› भूमिदान: राजाओं द्वारा धार्मिक संस्थाओं/ब्राह्मणों को, ग्रामीण समाज पर गहरा प्रभाव।

› उपमहाद्वीप में भूमार्ग, जलमार्ग से व्यापार; सत्थवाह, सेट्टी; रोमन व्यापार।

› ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को जेम्स प्रिंसेप व हिंद-यूनानी सिक्कों से समझा गया।